IOSR Journal of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 1, Issue 1, (Jul-Aug. 2012) 60-63
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845. www.iosrjournals.org

मध्य एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोरों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डा0 गीतिका सिंह
गृह विज्ञान विभाग श्री टीकाराम कन्या पी0जी0 कालजे, अलीगढ़

सारांश
मानव समाज में मूल्यों की भी अपनी अलग भूमिका होती है क्योंकि मूल्य वह है जिसे पाने के लिये हम लालायित रहते हैं। किन्तु आज की स्थिति ऐसी है कि हम मानवीय मूल्यों से परे होते हुये उन मूल्यों से अग्रसर हो रहे हैं जो स्वयं के लिये एवं समाज के लिये विध्वंसकारी है। इसलिये आवष्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति उन मूल्यों से ओतप्रोत हो जिनके द्वारा व्यक्तिगत व सामाजिक दोनों पक्षों का उत्थान होता है। कहीं भी और किसी समय भी विघटनकारी प्रवृत्तियां बलवती न हों सभी के हृदय में विश्वबन्धुत्व के भाव जाग्रत हो, लोग अपने समान दूसरों को समझें और उनके सुख–दुख में सहभागी रहें, यही मानवता का आधार है। कहीं भी अपेक्षा के दलदल में डूबने का प्रयास न करें बल्कि प्रेम, सामंजस्य, सात्वीकरण एवं सहयोग के भावों को दिखलायें।

परिचय

मानव समाज में मूल्यों का सर्वाधिक महत्व है क्योंकि सामाजिक मूल्य सामाजिक मानों के वे आदर्श या लक्ष्य है जिनके आधार पर विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों एवं विषयों का मूल्याकंन करते हैं। प्रत्येक समाज के अपने अलग–अलग मानदण्ड होते हैं इसलिये उनके मूल्य एवं आदर्श भी भिन्न होते हैं वस्तुतः सामाजिक मूल्य सामाजिक मान होते हैं जिनके द्वारा सामाजिक जीवन के अन्तर्सम्बन्धों का परिभाषित किया जा सकता है।

इसके द्वारा सभी प्रकार की चीजों का मूल्याकंन किया जा सकता है। भावनायें, विचार, क्रिया, गुण, वस्तु, व्यक्ति, लक्ष्य या साधन। मूल्यों का संवेगात्मक आधार भी होता है, जब मनुष्य किसी विषय वस्तु के बारे में निर्णय लेता है तो ऐसी स्थिति में संवेगों का उस पर स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है।

सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों या विभिन्न क्रिया–कलाप से सम्बन्धित अनेक प्रकार के मूल्य होते हैं जैसे एक परिवार के पिता से सम्बन्धित कुछ मूल्य होते हैं तो सम्पूर्ण राष्ट्र के शासन के सम्बन्ध में भी मूल्य हुआ करते हैं मूल्यों के माध्यम से व्यक्ति वह सीखता है कि क्या करणीय है। क्या करणीय है इसके सम्बन्ध से वह उचित–अनुचित का अन्तर स्पष्ट करने में सक्षम होता है इसलिये मूल्य और आदर्श आपस में इतने घनिष्ठ हैं कि इन्हें एक दूसरे से अलग करना सम्भव नहीं है। मूल्यों को अनेक मनोवैज्ञानिकों ने परिभाषित किया है :–

जानसन के अनुसार :–

मूल्य एक धारणा या मान है जो सांस्कृतिक हो सकता है या केवल व्यक्तिगत हो सकता है इसके द्वारा वस्तुओं की एक दूसरे के साथ तुलना की जाती है। स्वीकार या अस्वीकार किया जाता है, एक दूसरे की तुलना में उचित या अनुचित, अच्छा या बुरा, ठीक या गलत माना जाता है।

रवीन्द्रनाथ मुकर्जी के अनुसार :–

मूल्य समाज द्वारा मान्यतायें या लक्ष्य है जिनका अन्तीकरण सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है और जो व्यक्तिनिष्ठ अधिमान, मान अभिलाषायें बन जाती हैं।

इस अध्ययन में मूल्यों के छः पक्षों को लिया गया है –

प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक–आर्थिक स्तर का मापन करने के लिये डा0 आर0पी0 सिंह का सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी का प्रयोग किया गया।इस मापनी के द्वारा प्रयोज्य के सामाजिक–आर्थिक स्तर का निर्धारण पिता या अभिभावक की जाति, शिक्षा, व्यवसाय एवं आय के आधार पर किया गया है।

जाति के आधार पर –

उच्च जाति	–	3 अंक
मध्य जाति	–	2 अंक (पिछड़ी जाति)
निम्न जाति	–	1 अंक (अनुचित जाति/जनजाति आदि)

शिक्षा के आधार पर –

अशिक्षित	–	0 अंक
प्राइमरी	–	1 अंक
जूनियर हाईस्कूल	–	2 अंक
हाईस्कूल	–	3 अंक
स्नातक	–	5 अंक
स्नातकोत्तर	–	6 अंक
तकनीकी एक अन्य	–	7 अंक

व्यवसाय के आधार पर

1. प्रथम वर्ग– बड़े किसान, बड़े व्यापारी, डी0एम0, न्यायाधीश, डाक्टर, इंजीनियर, महाविद्यालय के शिक्षक, सांसद, राष्ट्रपति, कुलपति आदि को : 04 अंक
2. द्वितीय वर्ग– मध्यवर्ती किसान, व्यवसायी, जूनियर डाक्टर, इंजीनियर, उच्च ग्रेड क्लर्क, हाईस्कूल इंटरमीडियेट के शिक्षक, स्टेशन मास्टर आदि – 03 अंक
3. तृतीय वर्ग– छोटे स्तर के किसान, व्यापारी, ठेकेदार, पुलिस, सब इंसपेक्टर, पोस्टमैंन– 02 अंक
4. चतुर्थ वर्ग– श्रमिक, चपरासी, जमादार, ठेले वाले– 01 अंक

आय के आधार पर –

0 से 5000	–	1 अंक
5001 से 10000	–	2 अंक
10001 से 15000	–	3 अंक
15001 से 20000	–	4 अंक
20001 से 25000	–	5 अंक
25000 से ऊपर	–	6 अंक

इन चार क्षत्रों के प्राप्तांकों के आधार पर मापनी के मानक निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया गया है।

अंक	**स्तर**
0–12	निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर
13–16	मध्य सामाजिक आर्थिक स्तर

तालिका

मध्य एवं निम्न सामाजिक– आर्थिक स्तर के किशोर छात्र–छात्राओं के मूल्यों के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मूल्यों को प्रदर्शित करने वाली तालिका

मूल्य	मध्य सा0आ0 स्तर के किशोर छात्र–छात्राऐं			निम्न सा0आ0 स्तर के किशोर छात्र–छात्राऐं					
	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	एस0 ई0डी0	टी मूल्य	सार्थक स्तर
आध्यात्मिक	320	39.69	4.53	320	39.44	4.56	.36	0.69	N.S.
भौतिक	320	40.63	4.76	320	40.14	4.60	.37	1.32	N.S.
नैतिक	320	39.47	4.56	320	39.98	4.65	.35	1.46	N.S.
बौद्धिक	320	38.92	4.61	320	39.91	4.77	.37	2.68	**
प्रजातान्त्रिक	320	40.30	4.67	320	40.36	4.71	.38	0.16	N.S.
सृजनात्मक	320	40.99	4.60	320	40.17	4.72	.38	2.28	*

** = .01 स्तर पर सार्थक अन्तर।

N.S. = .05 स्तर पर भी सार्थक अन्तर नहीं।

* = .05 स्तर पर सार्थक अन्तर।

तालिका के ऑकड़ों पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट होता है कि मध्य सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं के मध्यमान आध्यात्मिक, भौतिक, नैतिक, बौद्विक, प्रजातान्त्रिक एवं सृजनात्मक मूल्यों में क्रमशः 39.69, 40.63, 39.47, 38.

92, 40.30 एवं 40.99 है। इनके मानक विचलन क्रमशः 4.53, 4.76, 4.56, 4.61, 4.67 एवं 4.60 हैं उपरोक्त मूल्यों में निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं के मध्यमान क्रमशः 39.44, 40.14, 39.98, 39.91, 40.36 एवं 40.17 है तथा इनके मानक विचलन क्रमशः 4.56, 4.60, 4.65, 4.77, 4.71 एवं 4.72 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता के लिये टी मूल्य ज्ञात किये गये हैं जो आध्यात्मिक, भौतिक, नैतिक एवं प्रजातान्त्रिक मूल्यों के लिये क्रमशः 0.69, 1.32, 1.46 एवं 0.16 प्राप्त हुये हैं। यह सभी टी मूल्य .05 स्तर पर भी सार्थक नहीं हैं। बौद्धिक मूल्य में 2.68 टी मूल्य ज्ञात किया गया है जो .01 स्तर पर सार्थक पाया गया है जबकि सृजनात्मक मूल्य में दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर के लिये 2.28 टी मूल्य प्राप्त किया गया है। यह टी मूल्य .05 स्तर पर सार्थक पाया गया है।

निष्कर्ष :–

तालिका के परिणामों पर विहंगम दृष्टि डालने से यह स्पष्ट होता है कि आध्यात्मिक, भौतिक, नैतिक एवं प्रजातान्त्रिक मूल्यों में मध्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं के मध्यमानों में पाया जाने वाला अन्तर . 05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। यहॉ हम यह कह सकते हैं कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राएं इन मूल्यों को लगभग समान महत्व देते हैं। क्योंकि जीवन के संचालन, नियन्त्रण एवं अस्तित्व में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनकी पिरिधि में ही व्यक्ति अपने व्यक्तित्व की सार्थकता को सामाजिक परिवेश में सिद्ध करने मे सक्षम होता है। इसके साथ ही साथ वह अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक मूल्यों को भी सहजभाव से आत्मसात् करता है जिससे कि वह अपने परिवेश के साथ प्रभावशाली एवं अपेक्षित सामन्जस्य स्थापित कर सके। वर्तमान समय में मध्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की छात्र–छात्राएं लगभग एक ही प्रकार की शैक्षिक संस्थाओं में विद्योपार्जन करते हैं। ऐसी स्थिति में इनमें आपस में अनेक प्रकार की अन्तःक्रियाऐं सहज भाव से संचालित होती रहती है। इन सबका परिणाम यह होता है कि सामाजिक–आर्थिक स्तर की भिन्नता के उपरान्त भी इनके जीवन के आदर्श एवं मूल्यों में समानता देखने को मिलती है। शायद यही कारण है कि इन मूल्यों में इन दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर .05 स्तर पर भी सार्थक नहीं पाये गये हैं। बौद्धिक मूल्य में निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं का मध्यमान, मध्य सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं के मध्यमान से अधिक है और इनके मध्यमानों का अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है। इस संदर्भ में हम यह कह सकते हैं कि आज के वैज्ञानिक परिवेश में निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राएं अपने जीवन के रहन सहन में अपेक्षित वृद्धि विकसित करने के लिये बौद्धिक मूल्य को विशेष महत्व देते हैं। उनका यह प्रयास होता है कि वे शिक्षा के माध्यम से उन सभी आदर्शों की ओर अग्रसर हों जिनकी परिधि में मानव जीवन का अस्तित्व अनवरत स्थापित रहता है। दूसरी ओर मध्य सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं के लिये इस प्रकार की प्रतिबद्धता की आवश्यकता नहीं होती है। शायद यही कारण है कि बौद्धिक मूल्य में इन दोनों समूहों के मध्यमानों में इस प्रकार का अन्तर परिलक्षित हुआ है। सृजनात्मक मूल्य में मध्य सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं का मध्यमान, निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राओं के मध्यमानों से अधिक है और इनके मध्यमानों का अन्तर .05 स्तर पर सार्थक पाया गया है। तार्किक आधार पर हम यह कह सकते हैं कि मध्य सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राएं जिस प्रकार के रचनात्मक, संगठनात्मक एवं विकसित परिवेश में अपना जीवन यापन करते हैं, निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राएं उससे वंचित रह जाते हैं। इसके अतिरिक्त इन्हें सृजनात्मक क्रियाकलापों से सम्बन्धित पक्षों के विषय में न तो पर्याप्त जानकारी हो पाती है और न ही पर्याप्त सुअवसर ही प्राप्त हो पाते हैं। जबकि मध्य सामाजिक–आर्थिक स्तर के छात्र–छात्राएं सृजनात्मक क्रियाकलापों के लिये अपेक्षित सुअवसर प्राप्त करने में सफल होते हैं। शायद यही कारण है कि सृजनात्मक में इन दोनों समूहों के मध्यमानों में इस प्रकार की भिन्नता देखी गयी है।

संदर्भ :–

1. ऐलेन जोसफ पी0 1989 – दि रिलेशन बिटवीन वैन्यूज एण्ड सोशल काम्पीटेन्स इन अरली एडोलैसेन्स, डेवलपमेंट साइकोलॉजी वॉल्यूम 35 (3) 458–464।
2. कु0 मंजू 1987 – विज्ञान एवं कला के स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं के मूल्यों का तुलानात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध आगरा विश्वविद्यालय आगरा को प्रस्तुत (अप्रकाशित)।
3. कौर, प्रवीण एवं अन्य 1993 – इंपैक्ट, ऑफ होम इनवाइरमेंट ऑन मॉरल वेल्यूज ऑफ चिल्ड्रन, प्राची जनैल ऑफ साइकोकलचरल डाइमेन्सन्स वाल्यूम–9, नं–1, पृष्ठ 39 से 43।
4. ग्रुव, जोयल डब्ल्यू तथा अन्य 1994–इन्क्लूडिंग चेन्ज इन वैल्यूज एटीट्यूड एण्ड विहेवियर्स विलीब्स सिस्टम, थ्यौरी एण्ड दि मेथड ऑफ वैल्यू सैल्फ कन्फ्रन्टेषन, जर्नल ऑफ सोशलइश्यूज, वाल्यूम 50(4) पृष्ठ 153–173।
5. ग्रुव जोयल डब्लू एवं अन्य 1995 – प्रीडिक्टिंग एडोलेसेन्ट ड्रिकिंग अल्कोहल एक्सपेक्टेन्सी वेल्यूज –एकम्पेरीजन ऑफ एडेक्टिव, इंटरैक्टिव एण्ड नान लीनियर माइल्स।
6. डी0 वाल्डन–गेलुज्को के0 तथा अन्य– दी साईक प्रोबलम ऑफ फेमिली केयर गिवर्स न्यू ट्रेन्ड्स इन एक्सपेरिमेन्टल।
7. बी0टी0 ली0ए0 1995 – इफैक्ट ऑफ पेटरन एब्सेन्स ऑफ मेल एडोलीसेन्टस् पीयर रिलेशन्स एण्ड सेल्फ इमेज, एडोलसेन्स। वाल्यूम–30, (120) 873–880।
8. मायोग्रेगरी, आर0 एवं अन्य – रिलेशन्स विटवीन वैल्यूज एटीट्यूडस एण्ड विहैवियरियल इन्टेन्शान्स, दि माडरेटिंग रूप ऑफ एटीट्यूड फंक्शन, जर्नल ऑफ एक्सपेरिमेन्टल सोशल साइकोलॉजी वाल्यूम, 31(3) पृष्ठ 266–285।

9. मैरिना एच0 1992 – इनवायरमेन्टिल्ज्म एण्ड पोलिटिकल पार्टी सिपेशन ऑफ सोशल विलीब्स एण्ड वैल्यूज जनैल ऑफ एप्लाइड सोशल साइकोलॉजी, वाल्यूम 22(8) पृष्ठ 657–673।
10. रॉगमैंन लोरी ए0 एवं अन्य 1995– क्रिटीकल थिंकिंग एक्सपीरिऐन्सेज फार स्टूडेन्टस ऑफ चाइल्ड डवलपमेन्ट आउट इन वेल्यूज केयर वॉल्यूम (107) पृष्ठ संख्या 97–107।
11. रवीन्द्रनाथ मुकर्जी 1999 – दशम् संस्करण, विवेक प्रकाशन, जवाहर सामाजिक विचार धारा, नई दिल्ली।
12. वार्ष्णेय प्रीति 2000 – उच्च, मध्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के ग्रामीण और शहरी स्नातक छात्राओं के व्यक्तित्व शील गुण, धार्मिक अभिवृत्तियों एवं मूल्यों का अध्ययन डॉ0 भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय, आगरा को पी–एच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित)।
13. वेलटेक 1994 – दि स्टूडैण्ट्स विद डिसऐविलीट्स वैल्यू कॉलेज एजूकेषन जर्नल ऑफ कालेज स्टूडेन्टस डेवलपमेन्ट, वॉल्यूम 35(6) पृष्ठ 494–495।
14. सिंह, आर0पी0 1986 – मेजर्स ऑफ वेल्यूज ऑफ द जनरेषन गैप, प्राची जर्नल ऑफ साइकोकलचरल डामेन्शन्स, वाल्यूम–2 नं0 1–2।
15. सिंह, आर0पी0 1993 – ए स्टडी ऑफ वेल्यूज ऑफ अरबन एण्ड रूरल एडोलसेन्ट स्टूडेन्टस, प्राची जरनल ऑफ साइकोकलचरल डाइमेन्शन्स वाल्यूम–9 नं0 1, पृष्ठ 7–11।
16. सिंह, एस0एन0 1984 – दि इफेक्ट ऑफ सोशियो इकोनोमिक स्टेटस ऑफ सोशल कनमफोरमिटी वाल्यूम 7(1) 36–37 एब्स्ट्रेक्ट पृष्ठ 45–66।